सामाजिक विकास -

परिभाषा -

सोरेन्सन - " सामाजिक अभिवृद्धि और विकास का तात्पर्य है। अपनी और दूसरों की उन्नति के लिए योजना वृद्धि "।

रॉस - सहयोग करने वाले लोगों में " हम भावना " का विकास और उनके साथ काम करने की क्षमता का विकास तथा संकल्प समाजीकरण कहलाता हैं।

हरलॉक -
सामाजिक विकास का अर्थ सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता को प्राप्त करना हैं।

Imp

शैशवावस्था में सामाजिक विकास :-

हरलॉक ने शिशु के शैश्वावस्था के विकास का निम्नलिखित वर्णन किया हैं।

* - प्रथम-माह में शिशु किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर स्पष्ट प्रतिक्रिया नहीं करता, केवल रुदन और नेत्रों में गति दिखाई देती हैं, वह तीव्र प्रकाश और ध्वनि के फलस्वरूप प्रतिक्रिया करता है।
* - दूसरे-माह में वह किसी की आवाज सुनकर सिर घुमाने लगता हैं और दूसरो को देखकर मुस्कुराता हैं।
* तीसरे-माह में जब उससे कोई बात नहीं करता या ताली बजाता हैं तो वह रोते-रोते चुप हो जाता हैं तथा अपनी माँ को पहचानने लगता हैं।
* चौथे-माह में वह पास आने वाले और उसे छोड़कर जाने वाले व्यक्ति की ओर देखता रहता हैं बोलने से मुस्कुराता हैं साथ खेलने से हँसता हैं।
* पाँचवे-माह में वह हँसने डाँटने अर्थात प्रेम और क्रोध के व्यवहार में अन्तर समझने लगता हैं।
* छठे-माह में शिशु परिचित-अपरिचित में अन्तर करने लगता हैं वह परिचितो के पास आना चाहता हैं परन्तु अपरिचितों से डरता हैं। शिशु बड़ो के प्रति प्रायः आक्रमक प्रकार का व्यहार करता हैं वह बड़ो के बाल कपड़े, चश्मा [illegible]

* - नौ - माह में शिशु दूसरों के शब्दों, हावभाव तथा कार्यों का अनुकरण करने का प्रयास करने लगता है।

* - एक वर्ष की आयु में शिशु घर के सदस्यों से हिल - मिल जाता है। किसी अनुचित काम को करने पर बड़ों के मना करने पर मान जाता है तथा अपरिचितों के प्रति अपना भय तथा नापसन्दी दर्शाता है।

* दो वर्ष की आयु में शिशु घर के सदस्यों उनके कार्यों में सहयोग देने लगता है। इस प्रकार की क्रियाओं से वह परिवार का एक सक्रिय सदस्य बनने का प्रयास करने लगता है।

* तीन वर्ष की आयु में पास - पड़ोस के अन्य शिशु बालकों के साथ तरह तरह के खेल खेलने लगता है। खिलौने के आदान - प्रदान तथा विभिन्न कार्यों में परस्पर सहयोग के वह अन्य बालकों से सम्पर्क बनाता है तथा उनसे सहयोग करके सामाजिक सम्बन्ध बनाता है।

* चौथे - वर्ष के दौरान शिशु प्रायः नर्सरी विद्यालय में जाने लगता है - जहाँ पर वह - नए - नए व्यक्तियों तथा बालकों से मिलता है तथा उनके साथ सामाजिक सम्बन्ध बनाता है। इस अवधि में वह नर्सरी विद्यालय के नए सामाजिक वातावरण में स्वयं को समायोजित करता है।

* पांचवे वर्ष - में शिशु में नैतिकता की भावना का विकास होने लगता है। वह जिस समूह का सदस्य होता है। उसके द्वारा स्वीकृत प्रतिमानों व मानकों के अनुरूप अपने को बनाने का प्रयास करता है।

* - छठें वर्ष में शिशु प्राथमिक विद्यालय में जाने लगता है जहाँ पर वह और नए दोस्त बनाता है।

भाषा विकास -

✱ प्रमुख बिन्दु -

1- भाषा की सबसे छोटी इकाई स्वनिम है - प फ ब स्वनिम ध्वनियाँ हैं।
भाषा की सबसे छोटी सार्थक इकाई रूपिम हैं।
2- रिबिल ने बच्चों के क्रंदन को आपातकालीन श्वसन माना हैं।
3- भाषा विकास की दृष्टि से प्रारम्भिक बचपन सबसे संवेदनशील अवस्था हैं।
~~4 भाषा विकास की दृष्टि से प्रारम्भिक बचपन सबसे संवेदनशील अवस्था हैं।~~
5- हकलाना और तुतलाना कोई बिमारी नहीं है बल्कि भाषा विकार हैं।
5- हकलाने को संवर्द्धित वाक् द्वारा छुड़ाया जा सकता हैं।
6- बालकों मे शुरुआती शब्द विशेषण होता हैं।
7- बालक की शुरुआती भाषा - क्रंदन, बड़बड़ाना तथा हाव - भाव से शुरु
8- होती हैं।
9- दो वर्ष के बालक लगभग दो शब्दों के 50 वाक्य बोलते हैं।

भाषा विकास के सिद्धान्त :—

✱ चॉमस्की का सिद्धान्त :—

✱- भाषा की क्षमता जन्मजात होती है।
✱- भाषा को ग्रहण करने के लिए हमारे पास भाषा ग्रहण यंत्र (LAD) होता है
✱ दुनिया की किसी भाषा को सीखने के लिए हमारे पास सार्वभौमिक व्याकरण संरचना (UGS) या जनरेटिव ग्रामर होती है।
✱- सभी बच्चे डेढ़ से दो वर्ष मे बोलने लगते हैं।

✱ स्किनर का सिद्धान्त :—

✱- इस सिद्धान्त को भाषा का वातावरणीय / क्रियाप्रसूत / अनुकरण - सबलीकरण का सिद्धान्त भी कहते हैं। इसके तीन चरण हैं।
1- अनुकरण - माता - पिता द्वारा शब्दों का अनुकरण
2. साहचर्य — शब्द और वस्तु को आपस मे जोड़ना
3. सबलीकरण - माता - पिता सिर्फ सही साहचर्य को बढावा देंगे।